महामहिम जी का डंगा

व्यंग्य

(श्रवण कुमार उर्मलिया)

आजकल हम भारतवासी अपने आप को बहुत महिमामंडित महसूस कर रहे हैं। बड़े अभिजात किस्म की महिमा है यह। बहुत तपस्या के बाद महिमामंडित होने का यह अवसर हमारे हाथ लगा है।

हमारा अभूतपूर्व राष्ट्रीय चरित्र हमें प्रायः महिमाविहीन किये रहता है। जैसे ही हम स्वयं पर गर्व करने की सोचने लगते हैं वैसे ही भ्रष्टाचार का राष्ट्रीय सौंदर्य-बोध हमें हमारी हैसियत बता देता है। किसी तरह हम स्वयं को सम्हालते हैं और गर्वानुभूति को गले लगाना चाहते हैं वैसे ही गिरी हुई नैतिकता जो कि विशाल राष्ट्रीय चरित्र की इज्जत लूट लेते हैं। फिर थोड़ा हम स्थितियों को सम्हालने का प्रयास करते हैं और विकल हो कर महिमा को अपनी काया से लपेटना चाहते हैं, तभी अमीरी-गरीबी, जनसंख्याओं का तिलिस्म और रिज़र्वेशन के उलझे समीकरण हमारा लिया-पाँचा कर देते हैं।

किसी तरह यदि महिमा कलौंकिनी माया की तरह भागकर छिपते-छिपाते हम तक आना चाहती है तो मँहगाई उसका रास्ता रोक लेती है। हम देशवासी भूख के बदले सकल घरेलू उत्पाद (जी०डी०पी०) में बढ़ोत्तरी सुनने के आदी हैं। हम चीखते हैं कि देश में मँहगाई बढ़ रही है। देश के असरदार सरदार कह देते हैं कि तो क्या हुआ, जी०डी०पी० भी तो बढ़ रहा है। विश्व में अनोखा देश है हमारा जहाँ मँहगाई बढ़ती है तो जी०डी०पी० बढ़ जाता है, जैसे-जैसे भ्रष्टाचार बढ़ता है वैसे वैसे भ्रष्टाचारी का महात्म्य बढ़ता जाता है।

बीच में कामनवेल्थ गेम्स ने हमें थोड़ी महिमा ओढ़ायी जरूर पर देश को बहुत मँहगी पड़ गई वह महिमा। खेल आयोजन समिति और अन्य महामहिमों ने बड़ी मेहनत की। अथक प्रयास किये। अपना खून-पसीना एक कर दिया। आखिर इतनी बड़ी रकम पचाना कोई आसान काम तो नहीं। वे सब बहुत मुलके हुए साबित हुए। उन्होंने देशवासियों से कहा- "हे भरतवंशियो, हे आर्यावर्त की संतानो, राष्ट्रमंडलीय खेलों को सफलतापूर्वक आयोजित कर हमने आप सभी को बहुत महिमामय कर दिया है। इसका सारा श्रेय भी हम आपको ही देते हैं। और रही माया, तो वह तो तुच्छ है, आनी-जानी है, इसलिए उस महाठगिनी माया को हमने आपस में बाँट लिया है। इस असार संसार में माया चलायमान है पर महिमा और गर्व चिरस्थायी हैं। देखिये भला, हमने कितना बड़ा त्याग किया है, आपकी आने वाली पीढ़ियाँ अपने आप पर गर्व कर सकेंगी।"

राष्ट्रमंडलीय खेलों की चकाचौंध में हम देशवासियों को लगा कि वाकई गुलामी बड़ी खूबसूरत और मँहगी होती है। हमारी सारी महिमा उड़नछू हो गई। हम फिर निराश और हताश हो गये। पर तभी घोषणा हुई कि भारतवर्ष की पुण्यभूमि में महामहिम ओबामाजी पधारने वाले हैं। सुन कर ऐसा लगा जैसे रेगिस्तान में मनभावन बारिश की घोषणा हो गई हो। हमारा हृदय महामहिम के प्रति श्रद्धा से भर गया। ऐसा लगा जैसे बराक ओबामा रूपी भगवान अपने श्रद्धालुओं को दर्शन देने

और उनकी पीड़ा दूर करने एक सर्वशक्तिमान का रूप धरकर आ रहे हों।

सभी इस भावी यात्रा के रंग में रंगने लगे हैं। 'दिल मांगे मोर' और 'हंग मतलब कोकाकोला' जैसे लौकिक स्लोगन लौटने लगे हैं। मैकडोनाल्ड और के.एफ.सी. में भीड़ बढ़ने लगी है। युवावर्ग बॉल-डॉन्स सीखने लगे हैं। चूंकि महामहिम ओबामा जी को काला रंग पसंद है इसलिए निरछल भारतवासी अपने आप को काले पहनावे में प्रलंबित करने पर तुल गये हैं।

यहाँ तक कि अब हमें रुपया भी नहीं भा रहा है। हमारे ख्यालों में हर ओर डालर ही डॉलर उड़ते हुए नज़र आ रहे हैं।

बराक साहब दीपावली के बाद आ रहे हैं यह भी उनकी दूरदर्शिता है। हम दीपावली में पटाखे-फुलझड़ियां जला कर अपने वातावरण को पर्याप्त रूप से पॅल्यूट कर लेंगे। वे हमें इस अभूतपूर्व सुख से वंचित नहीं करना चाहते। उनके आने के पहले पटाखों का समाप्त हो जाना सुरक्षा की दृष्टि से भी अच्छा है।

ओबामाजी को यह भी बताया गया होगा कि दीपावली में यहाँ घर-घर लक्ष्मीजी आती हैं। वैसे लक्ष्मी जी का वाहन उल्लू बड़ा शरारती होकर है। वह अपने रिश्तेदारों के यहाँ ही लक्ष्मीजी को ले जाता है। बाकी लोग ताकते रह जाते हैं। इस तरह इस वर्ष उन लोगों को निराश नहीं होना चाहिए जो उल्लू की साज़िशों का शिकार हो जाते हैं। हमारे अपने उल्लू ने हमें उल्लू बनाया तो घबड़ाने की कोई ज़रूरत नहीं। हमारे चिरप्रतीक्षित प्रातःस्मरणीय महामहिम पधार रहे हैं। वे हमें मालामाल करेंगे तो हम धन्य हो जाएंगे।

बड़ा जोश है हम भारतवासियों में। सारा क्लोज़ आ रहा है अपनी पिटारी ले कर। न जाने कितना कुछ छुपा हुआ है उस पिटारी में। भूखों के लिए रोटी, वस्त्रहीनों के लिए कपड़ा, विवश लोगों के लिए आश्वासन, पीड़ितों के लिए खुशियां। न जाने कौन कौन से मंत्र छिपे हैं उस पिटारी में। भुखमरी और बेरोजगारी के मंत्र, भारतवासियों का जीवन-स्तर सुधारने का मंत्र, हरेक आंख से आंसू पोंछने का मंत्र, भारतीयों का भविष्य सुधारने का मंत्र।

देने के मामले में ओबामा जी विशाल हृदय हैं। आने से पहले ही वे आउटसोर्सिंग उद्योग का बंटाधार कर चुके हैं। कौन नहीं जानता कि अमेरिका के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग को भारतीय ब्रेन्स ने अपने खून-पसीने से सींचा है। हमारी सेवाओं और उत्पादन की सुख-समृद्धि भोगी है उस देश ने। अब वही कृतघ्न देश अपने देश की सरकारी आउटसोर्सिंग आई.टी. इंडस्ट्री पर बंधन लाद रही है ताकि वे भारत और चीन जैसे देशों को सेवाएं न दें। इतना ही नहीं, इन कंपनियों पर भारी टैक्स लगाए जाने की भी खबर है।

इतने दरियादिल हैं हमारे भावी मेहमान ओबामा जी का देश। उनके सम्मान में हम पलक-पावड़े बिछाए हुए हैं। वे अपनी गुप्त पिटारी लेकर आएंगे और समस्त भारतीयों को निहारेंगे। हम सब उनकी यात्रा से तर जाएंगे।

वे हमारी संसद को भी संबोधित करेंगे क्योंकि वे बड़ी अच्छी अंग्रेज़ी बोलते हैं और अंग्रेज़ी सुन कर हमारी स्वामिभक्ति जाग उठती है। ऐसा लगता है जैसे हम मैकाले साहब के तलुवे चाट रहे हों। पार्लियामेंट का बाकायदा जीर्णोद्धार करवाया जा रहा है। हमें गंदगी और बदहाली को छुपाना है। साफ़-सफ़ाई को लेकर हमारी नाक नहीं कटनी चाहिए। हम भारतीय वैसे भी बहुत सफ़ाई पसंद हैं। जो गंदगी दिखती है उसे हम हटा देते हैं या ढंक देते हैं जैसे राष्ट्रमंडलीय खेलों के दौरान भैंसों के तबेलों को खेल के बैनरों और पोस्टरों से ढंक दिया था।

हाँ, जो गंदगी दिखती नहीं, जो कीचड़ नज़र नहीं आती, उसे हम अपनी आत्मा की कोख में शिशु की तरह पालते हैं।

ओबामा जी और उनका पूरा कुनबा मुंबई के ताज होटल में हमारा आतिथ्य ग्रहण करेगा। पूरे मुंबई में 26/11 की अकाल मृत्यु को प्राप्त आत्माएँ भटक रही हैं। उनकी मुक्ति नहीं हुई है। वे ताज के इस कंगूरे से उस कंगूरे तक बेचैनी से टहल रही हैं। वे आत्माएँ भी बराक ओबामा जी से ढेरों आस लगाये हैं। ज़रूर ओबामा जी अपनी पिटारी में ढेर-सी सहानुभूति लेकर आएंगे और सभी आत्माओं का तर्पण कर देंगे। मुंबई वाले प्रतीक्षा में होंगे कि ओबामा जी अपने पिटारे में से अब कोई योजना, कोई आर्थिक सहयोग निकालते ही हैं पर पिटारे से निकलेगी सहानुभूति की राख।

हम महामहिम को ताजमहल भी दिखाने ज़रूर ले जाएंगे। हमारी खासियत है कि हम अपने देश की गरीबी, अव्यवस्था, भ्रष्टाचार और भुखमरी वगैरह विदेशियों से छिपा जाते हैं और उन्हें ताजमहल दिखाते हैं। हम आतंकवाद, अत्याचार, अराजकता इत्यादि को लुका (छिपा) लेते हैं और विदेशियों को लाल किला-कुतुबमीनार दिखा देते हैं। ये इमारतें वह भ्रम पैदा करने में समर्थ हैं जो हम चाहते हैं। जब ताजमहल इतना खूबसूरत है तो शेष भारत तो खूबसूरत होगा ही। हम अपने नर्क को छुपा कर ताजमहल जैसा भ्रामक स्वर्ग दिखायेंगे ओबामा जी को।

क्या पता उनकी धर्मपत्नी को ताजमहल इतना पसंद आ जाए कि वे उसे खरीदने की ज़िद कर बैठें। अपनी संस्कृति और विरासत पर गर्व करने का ढोंग करने वाले हमारे कर्णधार, कसम से, ताजमहल बेचने में पल नहीं लगाएंगे।

तो, हे देशवासियों, बराक ओबामा जी भानुमती का पिटारा लिये पधार रहे हैं। गांव-गांव में यह खबर चिकनगुनिया की तरह फैल गई है। हम ओबामा जी की सुरक्षा में जनता की गाढ़ी कमाई का पैसा पानी की तरह बहा रहे हैं। जनपथ की दुर्दशा को नकारते हुए हम राजपथ को सजा-संवार रहे हैं। दीवाने-आम को ताक पर रख कर दीवाने-खास पर रंग-रोगन किया जा रहा है। देश के महान नेताओं की समाधियों का कायाकल्प किया जा रहा है ताकि ओबामा जी उन पर फूल-माला चढ़ा सकें। गांधीजी ने गाया - वैष्णव जन तो तेने कहिए जो पीर पराई जाणे रे! हम यही भाव ओबामा जी के सम्मान में गाएंगे क्योंकि वे हमारी पीड़ा दूर करने ही तो आ रहे हैं।

एक कल्पना उभरती है हमारे शंकालु मन में। ओबामाजी पधार चुके हैं। हम भारतवासी उतने ही खुश हैं जितने जार्ज पंचम के भारत आने से खुश हुए थे। हमारे राजनेताओं की निहित जनित विनम्रता का यह हाल है कि देशवासी सोच रहे हैं कि कारपेट की जगह इन्हें क्यों नहीं बिछा दिया गया।

ओबामाजी देश की संसद को संबोधित कर रहे हैं। हम सांस रोके बड़ी हसरत से सुन रहे हैं कि हमारे लिए वे किसी आर्थिक पैकेज का ऐलान करेंगे। हम मंत्रमुग्ध हो उनके चेहरे की तरफ बड़े दयनीय भाव से निहार रहे हैं। पर हर बार घुमा फिर कर महामहिम एक ही राग अलाप रहे हैं - न्यूक्लीयर डील की कमर्शियल निगोशियेशन करो, डिफेंस डील को अंतिम रूप दो, डिफेंस एग्रीमेंट करो, सी-17 एयर क्राफ्ट खरीदो, हमारे एग्रीकल्चरल उत्पाद को भारतीय बाजार में आने दो, हमारे डेयरी उत्पाद को भी अपनाओ---। हमारी आशा और विश्वास का उपहास उड़ाते हुए वे अपना माल बेचने की बात कर रहे हैं। हमें लग रहा है कि हमारे सामने सजधज कर कोई [illegible] बेचने वाला खड़ा है। हम उन्हें राष्ट्रपति समझे थे, वे तो सेल्समैन लग रहे हैं।

फिर कल्पना उभरती है कि हम ओबामाजी को अपने हैदराबाद हाउस में महाभोज दे रहे हैं। हम टकटकी लगाये उनके संबोधन में से हम भारतीयों के लिए किसी चमत्कारी ऑफर युक्त उद्घोष की प्रतीक्षा कर रहे हैं पर वे हैं कि मेजबानों को न्यूक्लीयर डील में लपेटे जा रहे हैं। हम भारतीयों की आत्मा कुढ़ रही है कि [illegible] के भोजन पर हमने भारतवर्ष की एक दिन की खाद्य समस्या हवन कर दी पर ओबामा जी इससे मस्त नहीं हो रहे हैं।

कल्पना जारी है क्योंकि ओबामा जी की विदाई वाकई कल्पना साबित हो रही है। हमने उन्हें राजस्थानी कालबेलिया डांस भी दिखा दिया, अपने यहां के स्नेक-चार्मर भी दिखा दिये पर उन्होंने पिटारा नहीं खोला। हमने उन्हें मुगल गार्डन में टहलाया भी पर वे हमें अपने हथियार बेचने की जुगत भिड़ाते रहे। हमने देश की महान विभूतियों की समाधियों पर उनसे फूल भी चढ़वा दिया पर ओबामा जी नहीं पिघले। हमने उन्हें सजे-सजाये गांव भी दिखा दिये और प्रतीक्षा करते रहे कि ग्रामीणों के उत्थान के लिए ही वे कुछ डॉलर हवा में लहरा दें। पर वे अधिकारियों को सुनाते रहे कि हे भारतीयो, तुम्हारे पर इतनी खेती की जमीन है, तुम लोग हमारे एग्रीकल्चरल प्रोडक्ट क्यों नहीं खरीदते?

मुंबई वाले भी ताज होटल के बाहर इंतजार करते रह गए कि अब ओबामा जी छज्जे पर आएंगे और वहां से डॉलर रूपी सुख-समृद्धि की बारिश कर देंगे। पर भीतर महामहिम मुंबई वालियों की आशाओं पर बॉल-डांस करते रहे और अपने साथ हमारे जन प्रतिनिधियों को भी नचाते रहे।

इस कल्पना के शिखर पर देख रहे हैं कि वे भारतीय उद्योग पतियों को संबोधित कर रहे हैं। हम उधेड़बुन में हैं कि शायद वे भारतीय उद्योग को बढ़ाने के लिए सहयोग की कोई बात करें पर उनका मुद्दा स्पष्ट है। यदि हमारे उद्योग-धंधे सुधर जायं तो अमेरिका का उद्योग क्या घंटी बजाएगा। हमें ओबामा जी एक [illegible] जैसे नजर आ रहे हैं।

और हमारे उद्योगपति उनकी धुन में झूम रहे हैं। यदि ओबामा जी कहें तो हमारे उद्योग पति अपना धन्धा बंद कर सन्यास लेने को भी तैयार हो जाएंगे। हम देख रहे हैं कि स्टॉक-एक्सचेंज में भी अपने भाषण में महामहिम वही सब कुछ दोहरा रहे हैं कि हे भारत, यदि आगे बढ़ना है तो हमारा माल खरीदो या पिछड़ जाओ।

हम अच्छी तरह समझ रहे हैं बराक ओबामा जी की भारत यात्रा का मतलब। न्यूक्लियर डील में उनके हिसाब से बड़ा पेंचा पड़ा हुआ है, यदि पेंच नहीं हटा और डील रद्द हुई तो फ्रांस, रशिया वगैरह मुंह बाये खड़े हैं। ओबामा जी थोड़ा हम भारतीयों के दृढ़निश्चय से शंकित भी हैं। हमें यूनियन कार्बाइड कांड ने जो सीख दी है उसके चलते हम इस से मुक्त नहीं होंगे, पर वे जानते हैं न्यूक्लियर डील में हम सुनिश्चित करना चाहते हैं कि दूसरा भोपाल कांड न हो।

हमारी कल्पना के अगले पड़ाव में हम देख रहे हैं कि सेल्समैन ओबामा जी ने अपना सारा माल बेचने का प्रबंध तो कर लिया है पर हम भारतीयों के लिए अपने पिटारे को नहीं खोला है। हम भारतीयों की आशाओं पर तुषारपात करते हुए वे वापसी के लिए अपना डेरा-डंडा बांध रहे हैं।

हम देख रहे हैं कि एअरपोर्ट पर हमारे जनप्रतिनिधि उन्हें भावभीनी विदाई दे रहे हैं। सभी की आंखें नम हैं, आंसू ढलढला रहे हैं पर ये खुशी के आंसू हैं। वी. आई. पी. की विजिट पर जो मिट्टी पलीद होती है उससे सभी को मुक्ति मिल रही है।

हम पुनः अंतिम दृश्य देख रहे हैं। सभी से विदा ले कर ओबामाजी अपने हवाई जहाज में चढ़ गये हैं, भीतर जाने से पहले वे मुड़कर सभी की ओर देख रहे हैं और अंगूठा उठा कर सभी का अभिवादन कर रहे हैं।

हम भारतवासियों को लग रहा है कि ओबामाजी हम सभी को ठेंगा दिखा रहे हैं। आखिर अपनी पिटारी में से उन्होंने हमारे लिए सम्भालकर रखा हुआ ठेंगा निकाल ही लिया।

—x—x—

श्रवण कुमार उर्मलिया / SHRAWAN KUMAR URMALIA
19/207, शिवम खंड / 19/207 Shivam Khand
वसुन्धरा / Vasundhara,
गाज़ियाबाद-201012, उ. प्र. / Ghaziabad-201012, U.P.
मोबाईल / Mobile: 09868549036
Email: skurmalia@hotmail.com